अधखिला फूल

अयोध्या सिंह उपाध्याय

हरिऔध

उपन्यास

अधखिला फूल

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

पढ़ना ही ज़िंदगी है

समर्पण

श्रील श्रीयुत मानोन्नत अखिलगुण गौरवालंकृत सी.ई. क्राफोर्ड साहब बहादुर मुहतमिम बन्दोबस्त आजमगढ़ बिबुधबृन्दविभूषणेषु!

प्रभुवर!

बालार्कअरुणरागरंजित प्रफुल्ल पाटलप्रसून, परिमलविकीर्णकारी मन्दवाही प्रभात समीरण, अतसीकुसुमदलोपमेयकान्ति नवजलधरपटल, पीयूषप्रवर्षणकारी सुपूर्ण शुभ्र शारदीय शशांक, रविकिरणोद्भासित वीचिविक्षेपणशीला तरंगिणी, श्यामलतृणावरण- परिशोभित उतुंग शैलशिखरश्रेणी, नवकिशलयकदम्बसमलंकृत बासंतिक विविध विटपावली, कोकिलकुल-कलंकीकृत कंठसमुत्कीर्ण कलनिनाद, अत्यन्त मनोमुग्धकर और हृदयतलस्पर्शी हैं। किन्तु इन अलौकिक प्रमोदकर प्राकृतिक पदार्थों की अपेक्षा किसी पुरुषरत्न के पवित्र औदार्य्यादिगुण विशेषहृदयग्राही और विमुग्धीकृत-मन:प्राण हैं। अतएव कश्चित् आश्चर्य का विषय नहीं है, यदि महोदय के लोकोत्तरगुणप्राण औदार्य्य, धर्य्य, दया, दाक्षिण्य, अदम्य उत्साह, अद्भुत साहस, विलक्षण कार्य्यदक्षता और अश्रुतपूर्व अमायिकता इत्यादि मेरे हृदय को हर्षोत्फुल्ल और विमुग्ध करें। आज वही हर्षोत्फुल्ल और विमुग्ध हृदय अपने भक्त्युद्गार-स्वरूप इस 'अधखिला फूल' नामक उपन्यास का विनीत भाव सेआपके करकमलों में सादर समर्पित करता है। यह सत्य है कि यह साधारण उपहार महानुभाव के पदमर्य्यादासम्मुख बहुत ही तुच्छ है, किन्तु जिन मानवमौलिमुकुट महाराजाओं के सन्निकट एक विभवशाली व्यक्ति का समर्पित रत्नाकीर्ण आभरण उपढोकनस्वरूप परिगृहीत होता है-उन्हीं के चरणकमलों में एक दीन भावुक जन के अर्पण किये हुए कतिपय साधारण प्रसून भी आदृत और स्वीकृत होते हैं। विशेष लिखना लोकलोचन भगवान भास्कर को दीप दिखलाना है।

विनयावनत,

हरिऔध

भूमिका

आज ठेठ हिन्दी की यह दूसरी पुस्तक आप लोगों के सामने है। मुझको इस बात का खेद है कि यह पुस्तक स्वर्गीय श्रीयुत बाबू रामदीन सिंह की उपस्थितिमें न तो पूरी लिखी जा सकी और न छप सकी। उनको इस पुस्तक के आद्धोपान्त अवलोकन का, और जहाँ तक शीघ्र सम्भव हो सके, इसके प्रकाश कर देने का एकान्त अनुराग था। किन्तु समय ने उनकी यह इच्छा पूरी न होने दी, वे इसको अधूरा छोड़कर स्वार्गारूढ़ हुए-और हम लोगों को अपार शोक से संतप्त कर गये। उनके स्वर्गगमन के एक वर्ष उपरान्त आज यह पुस्तक प्रकाशित होती है-और आप लोगों के सम्मुख उपस्थित की जाती है। यद्यपि आज वे इस धरातल में नहीं हैं, तथापि उनकी प्रत्येक सदिच्छा की पूर्ति-हम लोगों का वैसा ही कर्त्वय है-जैसा कि उनकी उपस्थिति में होता। अतएव आज भी इस ग्रन्थ के प्रकाशन द्वारा, उनकी एक इच्छा को पूरी होते देखकर हम यह समझते हैं, कि उनके विषय में हमारे जितने कर्त्वय हैं, उनमें से एक का पालन हुआ,और हमारे लिए यह एक सन्तोष का विषय है।

जिस भाषा में यह भूमिका लिखी गयी है-यह भाषा आजकल हिन्दी लेखकों को अभ्यस्त सी है। क्योंकि अधिकतर ग्रन्थ और समाचार पत्र इसी भाषा में लिखे जाते और प्रकाशित होते हैं। जिस विषय में जिसको अभ्यास है, उसमें वह प्रत्येक कार्य सुविधा के साथ कर सकता है। इसी सूत्र में इस भूमिका की भाषा में आजकल कोई उपन्यास किम्वा ग्रन्थ लिखना, इतना दुष्कर नहीं है, जितनी कि इसी भाषा की आनुसंगिक किसी नवीन भाषा में। मनुष्य स्वभावत: सुविधा को प्यार करता है और यथासामर्थ्य उसी ओर प्रवृत होने की चेष्टा करता है। तदनुकूल "ठेठ हिन्दी का ठाट" लिखने के पश्चात् उसी भाषा में कोई दूसरा ग्रन्थ लिखने का मेरा विचार न था। किन्तु मानोन्नत महात्मा डॉक्टर जी.ए. ग्रियर्सन साहब बहादुर की असाधारण गुणग्राहकता और अभूतपूर्व उत्साहप्रदान से, मैं "अधखिला फूल" नामक यह दूसरा ग्रन्थ भी ठेठ हिन्दी में लिखने को बाध्य हुआ। मेरे क्षुद्र ग्रन्थ का उक्त महात्मा ने जितना समादर

किया है, उसके लिए मेरा समुत्सुक हृदय कृतज्ञताव्यंजक सद्भावसुमनांजलि द्वारा भक्तिभाव से यद्धपि उनकी पूजा करता है। उक्त महानुभाव की असाधारण गुणग्राहकता, अभूतपूर्व उत्साहप्रदान और अपूर्व समादर-वास्तव बात तो यह है कि केवल मेरे लिए ही नहीं-हिन्दीहितैषी मात्र के लिए कृतज्ञता-प्रकाश की वस्तु और अपार आनन्द की सामग्री है। अतएव आत्मश्लाघा दोष से दूषित होने का भय होने पर भी मैं उनको प्रकाश करना चाहता हूँ। पाठकगण देखें वीर बृटिश जाति का हृदय कितना गुणग्राही है-और वह गुण का कहाँ तक समादर करती है।

श्रीयुत स्वर्गीय बाबू रामदीन सिंह जी द्वारा "ठेठ हिन्दी का ठाट" पाकर प्रशंसित महोदय ने उसके विषय में जो अनुमति प्रकाश की है-उससे न केवल उनका पूर्ण हिन्दी-भाषानुराग ही द्धोतित होता है-वरन उनकी सहृदयता और सज्जनता का भी पूरा परिचय मिलता है। वह अनुमति यह है-

टाउनसेन्ड

शिमला

5/7/1899

प्रिय महाशय,

"ठेठ हिन्दी का ठाट" के सफलता और उत्तमता से प्रकाश होने के लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। यह एक प्रशंसनीय पुस्तक है।

मुझे आशा है कि इसकी बिक्री बहुत होगी जिसके कि यह योग्य है। आप कृपा करके पण्डित अयोध्या सिंह से कहिये कि मुझे इस बात का बहुत हर्ष है कि उन्होंने सफलता के साथ यह सिद्ध कर दिया है कि बिना अन्य भाषा के शब्दों का प्रयोग किये ललित और ओजस्विनी हिन्दी लिखना सुगम है। संस्कृत शब्दों का प्रयोग आधार-दण्ड की

नाई है। लँगड़े यदि चलने के समय उस आधार से चलें तो ठीक है, परन्तु आप यदि किसी हृष्ट-पुष्ट मनुष्य को उससे काम लेते हुए देखेंगे, तो हँसेंगे। उसी प्रकार हम लोगों को उस लेखक पर, जो हिन्दी लिखने में संस्कृत के बहुत से शब्दों का प्रयोग करता है, हँसी आवेगी। मैंने सम्पूर्ण कापियाँ इस पुस्तक की, जो आपने कृपा करके भेजी थीं, ऐसे मित्रों के पास भेज दी हैं, जो सम्भव है कि इसकी वृध्दि करने में सहायक होंगे। मैं कुछ पुस्तकें पश्चिमोत्तर प्रान्त के शिक्षा विभाग के उच्च कर्मचारियों के पास भेजना चाहता हूँ।

आपका सच्चा

जार्ज ए. ग्रियर्सन

उक्त महात्मा केवल ऊर्ध्व लिखित अनुमति ही प्रगट करके शान्त नहीं हुए, उन्होंने कार्यदक्ष पुरुषों के समान अपने विचार को कार्य में भी परिणत करना चाहा। जिस समय कथित ग्रन्थ उनको प्राप्त हुआ, उनकी सेवा का समय पूर्ण हो गया था, और वे विलायत-यात्र के लिए प्रस्तुत हो रहे थे। कुछ ही दिनों पीछे वे भारतवर्ष को परित्याग कर विलायत पधार गये। अतएव उन्होंने जो कुछ विचार 'ठेठ हिन्दी का ठाट" के विषय में प्रान्तिक राजकर्मचारियों से प्रगट किया था वह कार्य में परिणत न हो सका। केवल बंगाल प्रान्त के शिक्षा-विभाग ने उसको बिहार प्रदेश की पुरस्कार-पुस्तकों में ग्रहण किया। किन्तु इससे उक्त महाशय भग्नोत्साह नहीं हुए, उन्होंने विशेष चेष्टा करके उसको 'सिविलसर्विस' परीक्षा की पाठयपुस्तकों में युक्त कराया और आजकल वह उक्त परीक्षा की पाठयपुस्तकों में परिगृहीत है। उक्त पुस्तक के कोर्स में परिगृहीत हो जाने पर प्रशंसित महोदय ने निम्नलिखित पत्र स्वर्गीय बाबू साहब को लिखा था।

Townsend,

Simla